Peer Reviewed Refereed and UGC Listed
Journal No. 47026

ISSN 2319 - 359X

AN INTERNATIONAL
MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

Volume - IX, Issue - II
March - August - 2021
Marathi / Hindi Part - I

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.601
www.sjifactor.com

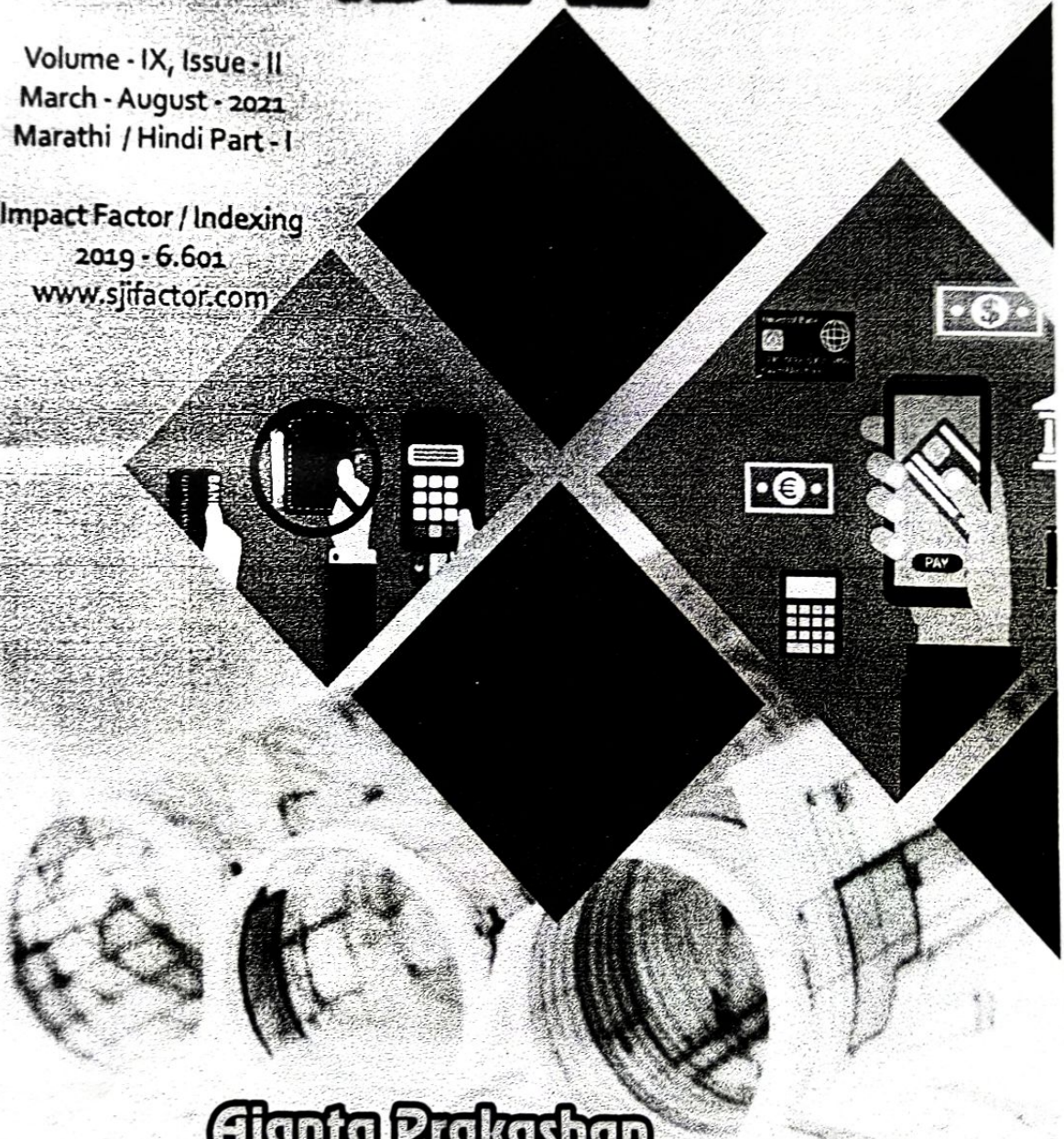

Ajanta Prakashan

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	सुशासन व लोकतान्त्रिक सरकार में मीडिया की भूमिका : कोविड-१९ के सन्दर्भ में। **डॉ. शालिनी चतुर्वेदी**	१-६
२	दौड़ की आँधी में बिखरते पारिवारिक मूल्य... **डॉ. संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी**	७-१०
३	भारतीय मातृभाषाएँ: आदिवासी भाषाओं की पाठ्यचर्या की आवश्यकता **डॉ. तारकेश्वर गुप्ता**	११-१६
४	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का परिवेशगत अवलोकन **डॉ. भगवाड गव्हाडे**	१७-२२

२. दौड़ की आँधी में बिखरते पारिवारिक मूल्य...

डॉ. संगिता सूर्यकांत चित्रकोटी
सहयोगी प्राध्यापिका एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग कोएसा. लक्ष्मी शालिनी महिला महाविद्यालय पेझारी,
ता. अलिबाग, जि. रायगड.

ममता कालिया हिन्दी साहित्य की एक प्रगतिशील रचनाकर रही है। साहित्य की कई विधाओमें उन्होने साहित्य सृजन किया है। कहानी, उपन्यास, कविता, एकांकी, बालसाहित्य आदि विधाओंपर उन्होने अपनी विद्रोही कलाम चलाई है। उन्होने अपनी लेखनी से रोज़मर्रा के संघर्ष को अभिव्यक्ति दी। प्रारम्भ में कहानियाँ लिखी उसके पश्चात स्फोटक विषयोंकों लेकर उपन्यास क्षेत्र में प्रवेश किया। 'बेघर', 'नरक-दर-नरक', 'लड़कियाँ', 'प्रेम कहानी', 'एक पत्नी के नोट्स', और दौड़ ये उपन्यास प्रकाशित हुए और उनकी मानवीय चेतना, अनुभूति की सघनता तथा चिंतन समन्वित आधार से हिन्दी जगत परिचित हुआ। उन्होने साहित्य जगत में समर्थ व सशक्त रचनाकर के रूप में प्रतिष्ठा ही नहीं प्राप्त की बल्कि उदयोन्मुख साहित्यकारों कों प्रेरित भी किया।

दौड़ ममता कालिया का छठा उपन्यास है। दौड़ में चित्रित है आज के मनुष्य की कहानी। भूमंडलीकरण, आर्थिक उदारीकरण के कारण भारतीय बाजार शक्तिशाली बन गया। बहुराष्ट्रीय कंपनियो ने युवा वर्ग के सामने नए ढंग के रोजगार के अवसर प्रदान किए। युवा वर्ग ने पैसा, ग्लैमर की चकाचौंध दुनिया में प्रवेश किया। अधिकांश युवाओको सपनों की उड़ान अनिवार्य लगी। उन्होंने इस चकाचौंध दुनिया में खूब सफलता भी पायी परंतु मानवीय संबंध, जीवन मूल्य, रिश्ते-नाते, संवेदना आदि से वे कोसो दूर चले गए। धीरेंद्र अस्थाना लिखते है - "दौड़ से गुजरना अवाक रह जाना है। जहाँ हर महीने वेतन मिले वही जगह अपनी होती है इस वाक्य को मंत्र की तरह जीती एक युवा पीढ़ी है जो भरेपुरे बाजार में खड़ी है। इस बाजार में महत्वकांक्षाएं है, भारी-भरकम वेतन प्राप्त करने की लालसाए है, खुद को साबित करने का जुनून है और क्षण में जीने की जिद। प्रतिस्पर्धा से प्रतिस्पर्धा की तरफ जाती इस आँधी दौड़ में रिश्ते-नाते, मानवीयता, संवेदना, शहर, सपना, लगाव, परंपरा सबका सब अर्थहीन, दकियानूसी और बीता हुआ उच्छवास भर है। यहाँ रिश्ते बहुत व्यावहारिक, रस्मी और सतही है यंहा शहर का अर्थ केवल रोजगार में खुलता है। यहाँ स्मृतिया एकदम व्यर्थ है और सपने सिर्फ तरक्की से जुड़े है। इस बाजार ने वह सबकुछ लील लिया है जो मनुष्य को मनुष्य बने रहने की ताकत देता है।" ...1

दौड़ उपन्यास में संवेदनशीलता और मूल्यहीनता की तरफ अंधाधुंध दौड़ती युवाओं की अवस्था का यथार्थ चित्रण किया गया है। कथावस्तु रेखा, राकेश, पवन, स्टैला, सघन के इर्दगिर्द बुनी गयी है। इस उपन्यास में रेखा और राकेश के दो पुत्र है पवन और सघन। रेखा और राकेश ने प्रेम विवाह किया था। भले ही उनके जमाने में वह क्रांतिकारी कदम था। पर वे मानवीय मूल्यों, पारिवारिक शिष्टाचार के प्रति

सदा कायल रहे। उनके विपरीत उनकी संताने पवन और सघन थे। उन्हे पारिवारिक स्नेह, आत्मीयत रिश्तों की अहमियत आदि से कुछ लेना देना नहीं था। उनका चरम लक्ष्य केवल धन कमाना ही बन गय था। ऐसी ही अवस्था लगभग सभी युवाओं की हो गयी है। भूमंडलीकरण के कारण परिवार का स्वरू बदल रहा है। विभिन्न आविष्कारोने हमारे रहन-सहन और जीवनयापन के ढंगों में क्रांति ला दी है। रहन-सहन के स्तर को बनाए रखने की मानो होड सी लगी है। हर व्यक्ति करीयरिस्ट बनाता जा रहा है व्यापार हो या नौकरी पद पर बने रहने के लिए और आगे बढ़ने के लिए वह संघर्ष करता रहता है।

पवन ने एम. बी. ए. पास कर लिया और पहले ही इंटरव्यूह में कंपनी ने उसे उठा लिया। कंपनं की कर्मभूमि ने उसे इस युग का अभिमन्यू बना दिया। घर की बहुत याद आने पर फोन करता पर एस टी. डी. काल्स की पल्स रेट पर ध्यान रहता। पल भर के लिए उसका मन धिक्कारता की घरवालों न बात करने मे भी महाजनी दिखा रहा है लेकिन दूसरे ही पल 'टाइम इज मनी' सोचकर पाँचसो से जाद पैसे महीने के बजट मे फोन के लिए नहीं रख पाता।

पिता राकेश पवन को यही-कही पास मे नौकरी करने के लिए कहते है ताकि बेटा उनके पास रह लेकिन पवन पिता की बात को टालते हुये कहता है "मेरे लिए शहर महत्वपूर्ण नहीं है, कैरियर है। मैं ऐस शहर में रहना चाहता हूँ जहाँ कल्चर हो न हो, कंजूमर कल्चर जरूर हो। मुझे संस्कृति नहीं उपभोक्त संस्कृति चाहिए तभी मै कामयाब रहूँगा।"... 2 राकेश और रेखा को बेटे की बातों ने स्तंभित कर दिय मानो जैसे अपने ही बेटे से उम्मीद खो बैठे हो क्योंकि उसने घर के सारे संस्कारों को ही त्याग दिय था। पाँच दिन छुट्टी पर आए पवन के साथ कितनी ही बातों पर नोकझोंक हो गयी क्योंकि बेटे का दृष्टिकोण एकदम बादल सा गया था फिर इस्त्री वाले को मनमाने पैसे देने की बात हो या जनम दिनपर बधाई देने की बात हो। हर साल की तरह माँ ने जनम दिन पर बधाई दी, मंदिर जाकर उसके लिए प्रार्थना भी की परंतु पवन को इस बात का अफसोस था की माँ ने उन्हे ग्रीटिंग कार्ड नहीं भेजा, जिसकी वजह से उसके सारा कलिग्ज हंसी उड़ा रहे थे। माँ को लगा अपने बेटे से उन्हे प्यार करने का नया तरीका सिखना होगा। जन्म से पीने वाला अपने ही जन्मभूमि का पानी पवन को रास नहीं आया और 10-12 बोतलें मिनरल वाटर की मँगवाई जैसे अपने ही देस में वह परदेसी हो गया।

रेखा अपने बेटे को विस्मित करने के उत्साह से उसके घर राजकोट बिना खबर किए जाती है लेकिन पवन को माँ का इस तरह बिना खबर किए आना रास नहीं आता। अपनीही माँ से पवन का सवाल- " माँ मेरा टाइम-टेबिल पूछ लेना चाहिए था।" ...3 बेटे का इस तरह का सख्त रूखा सा व्यवहार रेखा को रुला देता है। यंही पर रेखा की मुलाकात स्टैला से हो जाती है। स्टैला पवन की बिजनेस पार्टनर, लाइफ पार्टनर, रूम पार्टनर है। माँ को स्टैला जैसी सिलबिल सी लड़की जरा पसंद नहीं आती जो शादी के पहले ही अपने पति के साथ रहे। पवन का टका सा जवाब "तुमने देखा ही क्या है माँ? इलाहाबाद से निकलोगी तो देखोगी न...।" ...4 आज के परिवेश में यौन स्वछंदता मे युवक जीने लगा है। यौन मूल्यों

में गिरावट आई है। युवाओंकी पापबोध की मानसिकता, गिल्टी फिलिंग समाप्त हो गयी है। प्रारम्भ में 'लिव इन रिलेशनशिप' में रहनेवाले स्टैला -पवन स्वामीजी की आश्रम में जाकर सामुहिक विवाह कर घर आते है। रेखा स्टैला को स्त्रियोचित काम सीखने के लिए दबाव डालती है परंतु पवन माँ को फिर से उल्टा जवाब देता है -"हम यहाँ माता-पिता का आशीर्वाद लेने आयें है। उपदेश नहीं जो गुण है इस लड़की में उन्हे देखो। कंप्यूटर विज़र्ड है यह। इसके पास बिल गेट्स के हस्ताक्षर की चिट्ठी आती है। समय की दस्तक पहचानो। इक्कीसवी सदी में सड़े गले विचार लेकर नहीं चलना है हमें। इनका तर्पण कर डालों।" ... 5 पवन-स्टैला जैसे युवाओं के अपने कुछ जीवनमूल्य है। जिससे वे अपना जीवन संचालित करना चाहते है। उन्हे बीच में किसी की भी दखलअंदाजी नहीं चाहिए, फिर वे जन्मदाता ही क्यों न हो? आधुनिकता के विभिन्न परिपार्श्व ने नई और पुरानी पीढ़ी में अंतर आया है। अतः संघर्ष का परिवेश दिखाई देता है। ऐसा ही संघर्ष पवन और उसके माता पिता में निर्माण होता है।

आर्थिक स्वावलंबन शिक्षा और करियर को प्रधानता देनेवाली युवा पीढ़ी में आजकल दाम्पत्य भाव भी नहीं रहा। दाम्पत्य के बीच संबंधों के माधुर्य की वह स्निग्धता अब नहीं रही जिससे एकात्म रहते थे। पति-पत्नी के संबंधों में भी नए मूल्य, नये आयाम जुडने लगे है। पवन-स्टैला विवाह के तुरंत बाद अलग-अलग रहने वाले है। पवन तरक्की के लिए कंपनी और पत्नी को छोड़कर चेन्नई जा रहा था। स्टैला भी अपना बिझनेस छोडकर उसके साथ नहीं जा सकती थी अर्थात अब उनका दांपत्य सेटेलाइट और इंटरनेट से चलाने वाला था।

रेखा-राकेश का दूसरा बेटा सघन भी साफ्टवेयर का कोर्स पूर्ण कर ताइवान अर्थात परदेस नौकरी करने चला जाता है। 'वायरल फीवर की तरह 'विदेश वायरस' भी आजकल युवाओं में फैला हुआ है।' पवन वहाँ जमाने के लिए या अपने अस्तित्व के लिए लोकल पॉलिटिक्स में हिस्सा लेकर लोकल लोगों के समर्थन में बोलता है। माता-पिता संकट का आभास पाकर सघन को वापस बूलाते है, लेकिन सघन की मातृभूमि में वापसी लगभग असंभव हो जाती है।

रेखा-राकेश जैसे कई माता-पिता है जो कामयाब संतानों के माँ-बाप है लेकिन हर एक के चेहरे पर भय और आशंका के साये है। बच्चों की सफलता इनके जीवन में सन्नाटा बुन रही है। इन्ही के कॉलनी में रहनेवाले सोनी साहब को दिल का दौरा पड़ा। हॉस्पिटल में उन्हे भरती करवाया लेकिन बच नहीं सके। बेटा सिद्धार्थ विदेश में नौकरी करता था। इंटरनेशनल कॉल मिलाकर उसे सूचना दी लेकिन सिद्धार्थ ने रूखे भाव से कहा "अंकल मै कितनी भी जल्दी करुंगा मुझे पहूँचने में हफ्ता लग जाएगा। आप बॉडी मुरदाघर में रखवा दीजिए। यहाँ तो महीनों बॉडी मारच्युरी में रखी रहती है। जब बच्चों कों फुरसत होती है फ्यूनेरल कर देते है।" ...6 यही बहाने बाज़ बेटा अपने माँ का धीरज इन शब्दों में बांधता है "लोग बता रहे है मेरे आने तक डैडी को रखा नहीं जा सकता। आप ऐसा कीजिए। इस काम के लिए किसी को

बता रहे है मेरे आने तक डैडी को रखा नहीं जा सकता। आप ऐसा कीजिए। इस काम के लिए किसी को

बेटा बनाकर 'दाह संस्कार' करवा दीजिए। मेरे लिए तेरह दिन रुकना मुश्किल होगा। आप सब कम पूरे

कराया लीजिए। मजबूरी है ममा। मेरा दिल रो रहा है। मै आपकी मुसीबत समझ रहा हूँ। और घर अनजान लोगों के लिए खुला मत छोड़िएगा। इंडिया में अपराध कितना बढ़ गया है। हम बी. बी. सी. पर सुनते रहते है।" ...7 सिद्धार्थ के ये वाक्य संवेदन हीनता के सबल प्रमाण है। आडंबर, बनावटीपन सरल भावनाओं पर हावी हो गए है। एक दूसरे के प्रति प्रेम खत्म हो गया है। उसका मन रेगिस्तान की तरह हो गया है। जहाँ कोई सघन वृक्ष नहीं मात्र कैक्टस उगते है।

इस प्रकार वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण और निजीकरण के प्रभाव में जीती युवा पीढ़ी के लिए सामाजिक बंधन, परिवार अपनापन, ममत्व सब छलावा है। यह बस अपना जीवन अपने तरीके से जीना चाहती है। धीरेंद्र अस्थाना लिखते है - "इन चरित्रोंने अपना जीवन खुद गढा है। इनका अपना एक गणित है और अपना ही सौंदर्य शास्त्र। वह साहित्य और संस्कृति के बीच पल बढ़कर जवान हुई पीढ़ी नहीं। इंटरनेट,ई-मेल, और सर्फिंग के समय की सरगम है और इस सरगम में रिश्तों नातों का कोई संवेदनात्मक स्वर नहीं है।" 8

इंटरनेट, कंप्यूटर की दुनिया में युवा वर्ग दौड़ रहा है, अत्यधिक व्यस्तता कृत्रिमता ने अनेक विषमताओं को जन्म दिया है। अजनबीपन, संवेदनहीनता तनाव, स्वार्थी प्रवृत्ति ने युवाओंको प्रभावित किया है। व्यक्ति का हृदय पत्थर का बन गया है। मानवीय संबंधों की सहजता, प्रेम, सहयोग, त्याग, सेवा जैसे मूल्य समाप्त हो गए है। और भावशून्यता की स्थिति बढ़ती जा रही है। दिनकर के शब्दों में ...

"सब कुछ मिला नए मानव को
एक न मिला हृदय कातर
जिसे तोड़ दे अनायास ही
करुणा की हल्की ठोकर"

संदर्भ

1. ममता कालिया, दौड़, वाणी प्रकाशन, संकरण 2009 पृष्ठ 87
2. वहीं पृष्ठ 40-41
3. वहीं पृष्ठ- 52
4. वहीं पृष्ठ- 52
5. वहीं पृष्ठ- 63
6. वहीं पृष्ठ- 80
7. वहीं पृष्ठ- 81
8. वहीं पृष्ठ- 87-88